बाल्यावस्था एवं प्रगतिशील बालक

Childhood and Growing up

Course - I

B.Ed. Ist Year

M.G.S. University , Bikaner

Presented By:

Naresh Popli

Reader

Institute of Advance study in Education

Bikaner

Unit - I

(a) Educational Psychology : Its meaning , methods , Scope , functions and applications

शिक्षा मनोविज्ञान - अर्थ , शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियां , शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र , कार्य व उपयोगिता या अनुप्रयोग

(b) Psychology of adolescents: Growth and Development of the learner : Growth and Development – Meaning, Principles (Physical , Social , mental and Emotional Development) and their implications of learning

किशोरावस्था का मनोविज्ञान : अधिगमकर्ता का वृद्धि व विकास वृद्धि एवं विकास का अर्थ , सिद्धांत (शारीरिक , सामाजिक , मानसिक व संवेगात्मक विकास) एवं अधिगम हेतु निहितार्थ

(c) Heredity and Environment
वंशानुक्रम एवं वातावरण

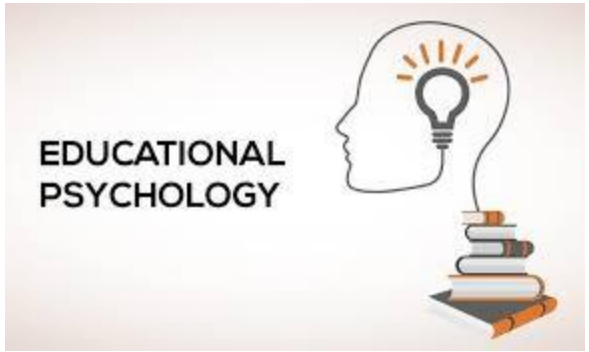

Unit I – Part (a)

Education Psychology : Meaning

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ :-

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ - शिक्षा शब्द अंग्रेजी भाषा के एजुकेशन का हिंदी रूपांतरण है | इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द एडुकेटम से हुई है जिसका अर्थ होता है शिक्षित करना अथवा शिक्षण कला |

संकुचित अर्थ - " बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना "
" कुछ बाते कंठस्थ कराना "

व्यापक अर्थ - शिक्षा जीवन भर चलने वाली क्रिया है

संक्षेप में - " शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है "

मनोविज्ञान : Psychology

Psychology शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Psyche + logas से हुई है, इसमें Psyche का अर्थ आत्मा से व logas का अर्थ विज्ञान से लिया गया है
अतः प्रारंभिक अवस्था में मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना जाता था |

John B. Watson

वाटसन के अनुसार - " मानविज्ञान व्यव्हार का शुद्ध विज्ञान है "

Robert S. Woodworth

वुडवर्थ के अनुसार - " सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा , फिर अपने मस्तिष्क को त्यागा , फिर अपनी चेतना खोई और अब एक प्रकार के व्यव्हार के रंग को अपनाए हुए है "

शिक्षा मनोविज्ञान , Education Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ है - शिक्षा प्रक्रिया से सम्बंधित मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान , मनोविज्ञान की व्यावहारिक शाखा है |

stephen

स्टीफन के अनुसार - " शिक्षा मनोविज्ञान , शैक्षणिक विकास का क्रमिक अध्ययन है "

Crow and Crow

क्रो एंड क्रो के अनुसार - " शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन एवं व्याख्या है "

शिक्षा मनोविज्ञान से अध्यापक ये जानेगा कि छात्र छात्राओं को किस प्रकार उत्तम व्यव्हार योग्य बनाया जावे |

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य :-

१. व्यक्तिगत विभिन्नताओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे |
२. बालकों के मानसिक स्वास्थय को जान सकेंगे |
३. बालाकों की बुद्धि लब्धि को जान सकेंगे |
४. बालकों के विभिन्न व्यवहारों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी |
५. विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का निर्माण हो सकेगा |
६. असाधारण विद्यार्थियों का अध्ययन किया जा सकेगा |
७. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन कर सकेंगे |
८. छात्रों को निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर सकेंगे |
९. समस्यात्मक बालकों का अध्ययन किया जा सकेगा |
१०.बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन किया जा सकेगा |

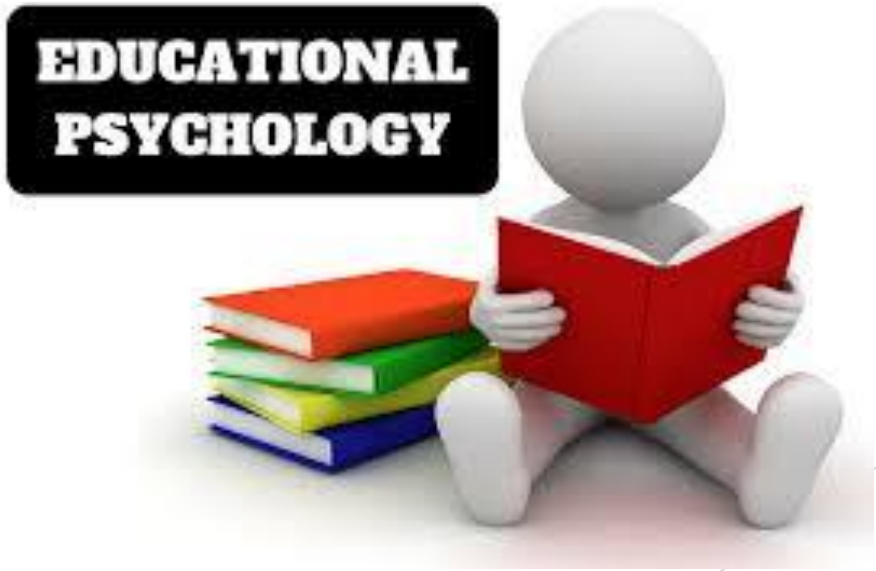

शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियां :-

सामान्य शब्दों में किसी विषय को पूर्व निश्चित योजना के अनुसार अध्ययन करना ही विधि है |

मनोविज्ञान को विज्ञानं कहा जाता है अतः यह आवश्यक है कि मनोविज्ञान की विधियाँ - निष्पक्ष , वस्तुनिष्ठ , सत्य व विश्वसनीय हो |

Methods of Education Psychology

- Observation Method
  - Introspection Method
  - Extrospection Method
- Experimental Method
- Descriptive Method
  - Case Study
  - Developmental
  - Comparative
  - Clinical
  - Sociomatric
  - Statistical
  - Questionary
  - Interview
  - Rating Scale

Scope of Education Psychology

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र :-

शिक्षा मनोविज्ञान का कार्यक्षेत्र व्यापक एवं विस्तृत है यह वह विज्ञान है जो छात्रों के व्यव्हार का एवं उनके शैक्षिक परिवेश का अध्ययन करता है :-

१. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन
२. वंशानुक्रम एवं वातावरण का अध्ययन
३. बालक की शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन
४. बालकों के विकास की विभिन्न अवस्थाएं (शारीरिक , सामाजिक , मानसिक व् संवेगात्मक)
५. सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन
६. निर्देशन व् परामर्श
७. मापन एवं मूल्यांकन
८. रूचि एवं थकान का अध्ययन
९. मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का अध्ययन
१०.अपराधी बालकों का अध्ययन
११.प्रतिभाशाली बालकों का अध्ययन
१२.सामाजिक रूप से पिछड़े बालकों का अध्ययन
१३.अभिवृत्ति , अभिरुचि , का अध्ययन
१४.प्रेरणा , उददीपन , पुरस्कार , दंड के प्रभाव का अध्ययन
१५.शिक्षण विधियों का अध्ययन
१६.पाठ्यक्रम निर्माण सम्बन्धी अध्ययन
१७.मानसिक स्वास्थ्यय विज्ञान का अध्ययन

शैक्षिक मनोविज्ञान का महत्व / कार्य / उपयोगिता / अनुप्रयोग :-

छात्रों हेतु उपयोगिता व् अनुप्रयोग :-

१. बाल केंद्रित शिक्षा
२. शिक्षण पद्धति में परिवर्तन
३. पाठ्यक्रम निर्माण में
४. समय सारणी
५. अनुशासन
६. पाठ्य सहगामी क्रियाएँ
७. मापन व् मूल्यांकन
८. समस्यात्मक बालकों को समझाना
९. अधिगम प्रक्रिया में सुधार
१०.व्यक्तित्व के विकास हेतु

अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का अनुप्रयोग:-

१. आत्मज्ञान प्राप्त करने हेतु
२. सामाजिकता के विकास हेतु
३. छात्रों को जानने के क्रम में
४. विभिन्न अनुसन्धान कार्य करने में
५. शिक्षण पद्दतियो की जानकारी हेतु
६. पाठ्यक्रम निर्माण करने में
७. मूल्यांकन व् परिक्षण हेतु
८. निर्देशन एवं परामर्श हेतु
९. छात्रों की समस्या समाधान के लिए
१०.अनुशासन स्थापित करने में
११.शिक्षण कार्य में सुधार हेतु
१२.कक्षागत समस्याओं का निदान व् समाधान

Unit I – Part (b)

<u>Psychology of Adolescents : किशोरावस्था का मनोविज्ञान</u>

Adolescent लैटिन भाषा की Adolescre क्रिया से आया है |इसका अर्थ होता है प्रौढ़ता आना i.e. to grow to maturity

यह अवस्था बहुत ही भावुक होती है , it needs to be handle with care

स्टेनले हाल के अनुसार " किशोरावस्था बड़े संघर्ष , तनाव , तूफ़ान तथा विरोध की अवस्था है "

किशोरावस्था की विशेषताएं :-

१. क्रान्तिकारी परिवर्तन की अवस्था है
२. अपराध प्रवर्ति चरम पर रहती है
३. शारीरिक परिवर्तन तेजी से होते है
४. आत्मसम्मान की भावना
५. अध्ययन में रूचि
६. शारीरिक , मानसिक व् संवेगात्मक विकास चरमोत्कर्ष में होता है
७. धार्मिक चेतना का उदय
८. तर्क शक्ति योग्यता में वृद्धि

Nareshpopli, Reader, I.A.S.E. Bikaner

To be continued..

९. कल्पनाशीलता का बाहुल्य
१०.समायोजन की कमी
११.समूह को महत्व
१२.रुचियों की ओर आकर्षण चरम पर होता है
१३.वीर पूजा (Hero worship) fan होना
१४.व्यवसाय की चिंता

Growth and Development of the Learner

वृद्धि क्या है ? Meaning Of Growth:-

वृद्धि का अर्थ बालक की शारीरिक लम्बाई , चौड़ाई व् भार में वृद्धि से होता है | शारीरिक संरचना व् आकृति में परिवर्तन वृद्धि है | वृद्धि का माप्न संभव है |

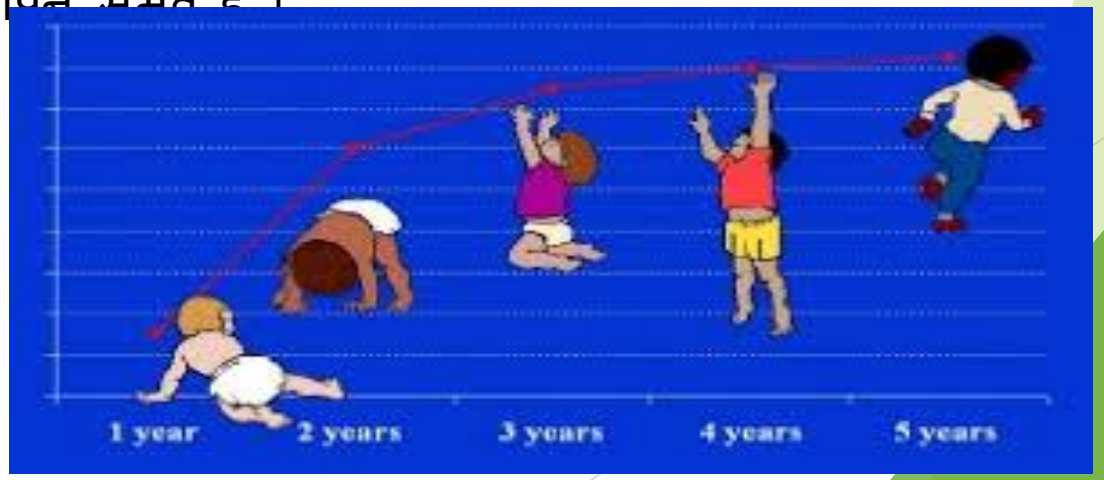

विकास (Development):- विकास शरीर के गुणात्मक (Qualitative) परिवर्तन को कहते है जिसके कारण व्यक्ति की कार्य क्षमता , कार्य कुशलता ओर व्यव्हार में प्रगति तथा अवनति होती है

वृद्धि व् विकास में अंतर

वृद्धि	विकास
१. वृद्धि विशेष आयु तक जारी रहती है	जबकि विकास जन्म से मृत्यु तक जारी रहता है
२. वृद्धि सीमित है	विकास विस्तृत है
३. वृद्धि का मापन किआ जा सकता है	विकास का मापन संभव नहीं है
४. वृद्धि के परिवर्तनों को स्पष्ट देखा जा सकता है	जबकि विकास के गुणात्मक पक्ष दिखाई नहीं देते
५. जीवन के अनुभवों का योगदान नहीं है	जीवन के अनुभवों से विकास में वृद्धि होती है
६. शारीरिक आकृति से पता चलता है	कार्यकुशलता , कार्यक्षमता से पता चलता है

वृद्धि व् विकास क सिद्धांत :-

१. निरंतर विकास का सिद्धांत - जीवन पर्यन्त चलती रहती है
२. साधारण से विशिष्ट की ओर बढ़ने का सिद्धांत
३. सिर से पाँव की ओर वृद्धि का सिद्धांत
४. वंशानुक्रम एवं वातावरण के संयुक्त परिणाम का सिद्धांत
५. समग्र व्यक्तित्व का सिद्धांत
६. विकास की भविषयवानी का सिद्धांत
७. विभन्नता का सिद्धांत
८. परिपक्वता का सिद्धांत

वृद्धि व् विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

१. पौष्टिक आहार
२. वातावरण
३. यौन भेद
४.आनुवंशिकता
५. अंत स्त्रावी ग्रंथियां
६. बुद्धि लब्धि
७. चोट या दुर्घटना
८. बालक का परिवार

विकास की अवस्थाएं :-

Infancy (from birth to 5 years)

Childhood (6-12 years)

Adolescence (13-18 years)

Adulthood (above 18 years)

विकास के अध्ययन का शिक्षा में महत्व :-

१. बालक पोषण के ज्ञान हेतु
२. बालक के व्यव्हार को जानने में
३. विकास की विभिन्न अवस्थाओं से अवगत होने में
४. अनुसन्धान कार्य हेतु
५. स्वास्थ्यय संबंधीकजानकारी हेतु
६. विभिन्न शिक्षण क्रियाओं के निर्धारण में
७. व्यक्तित्व की जानकारी हेतु

१. किशोरावस्था में शारीरिक विकास :

इस काल में अनेक शारीरिक परिवर्तन व् विकास होते है |

निम्न शारीरिक विकास होता है :-

१. भार
२. लम्बाई
३. अस्थियां
४. मस्तिष्क
५. दांत
५. लैंगिक परिपक्वता
७. अन्य अंग
८. हार्मोनल विकास
९. अन्य विकास

शारीरिक विकास प्रभावित करने वाले कारक:-

१. वंशानुक्रम
२. वातावरण
३. मानसिक तनाव
४. पौष्टिक आहार
५. खेल, व्यायाम
६. शिक्षा
७. निद्रा
८. घर, परिवार का वातावरण

किशोरावस्था बालक के अधिगम हेतु शारीरिक विकास व् शिक्षा शारीरिक शिक्षा व् शेक्षिक निहितार्थ

१. किशोर को साफ़, सुथरा, स्वस्थ रहने की शिक्षा दी जानी चाहिए
२. पर्यावरण की स्वछता , संरक्षता , महत्व की शिक्षा
३. दुर्बल व् विकलांग बच्चों हेतु विशिष्ट शिक्षा की व्यवस्था
४. शारीरिक परिवर्तनों की शिक्षा
५. व्यायाम व् योग शिक्षा

२. किशोरावस्था में मानसिक विकास :- 15-18 वर्ष की आयु में मानसिक विकास तेजी से होता है किशोरावस्था में स्मृर्ति , कल्पना शक्ति . रुचियों , बुद्धि का विकास तेजी से होता है निम्न तरह से किशोरों का मानसिक विकास होता है :-

१. बौद्धिक विकास तेजी से होता है
२. मानसिक रूप से स्वतंत्र रहते है
३. रीती रीवाजो , अंध विश्वासों में कम यकीन रखते है
४. कल्पना शक्ति त्रीव होने लगती है
५. तर्क शक्ति का अत्यधिक विकास होता है
५. स्मृति विकसित हो जाती है

मानसिक विकास प्रभावित करने वाले कारक:-

१. वंशानुक्रम
२. वातवरण
३. शारीरिक स्वास्थ्य
४. आर्थिक स्तर
५. घर- परिवार का वातावरण
६. सामाजिक स्तर
७. विद्यालय का वातावरण
८. मित्र मण्डली का

मानसिक विकास हेतु शिक्षा :-

१. निर्देशन एवं परामर्श कक्षाओं का आयोजन
२. हॉबी कक्षाएं
३. योग एवं व्यायाम की शिक्षा
४. पाठ्य सहगामी प्रवर्तियों का आयोजन किया जाये
५. करके सीखने पर बल
६. भ्रमण –, पर्यटन

३. किशोरावस्था में सामाजिक विकास : - अपने व समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ संपर्क स्थापित करने की बढ़ती हुई योग्यता का नाम सामाजिक विकास है |

किशोरों में सामाजिक विकास की विशेषताएं :-

१. सामाजिक विकास चरम पर होता है
२. माता-पिता , परिवार की अपेक्षा साथी समूहों व दोस्तों के साथ रहना पसंद है
३. विपरीत लिंग की ओर आकर्षित होते है
४. "सामाजिक पहचान" को स्थापित करने क लिए किशोर व किशोरियों का क्रियाशील रहना ही किशोरावस्था का मुख्य आकर्षण है |
५. समूह भावना , आस्था व त्याग का व्यापक रूप दिखाई देता है
६. आत्म सम्मान की भावना का विकास

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

१. आनुवंशिकता २. वातावरण ३.नेतृत्व ४. संवेग
५. खेलकूद ६. सामुदायिक कार्य ७. आर्थिक स्तर ८. मित्र मण्डली

सामाजिक विकास व शिक्षा :-

१. शारीरिक शिक्षा
२. सामाजिक विज्ञान
३. जनसंख्या शिक्षा
४. पर्यावरण शिक्षा
५. निर्देशन एवं परामर्श
६. नैतिक व मूल्य शिक्षा

४. किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास :- संवेग किसी भी प्रकार के आवेश को सूचित करते है | संवेगो की उपस्थिति में हमारा मन , शरीर व अनुभूति सभी प्रभावित होती है |

१. संवेग कभी भी उपस्थित हो सकते है
२. संवेग शरीर को उत्तेजित करते है
३. संवेग शरीर में व्यावहारिक परिवर्तन लाते है
४. संवेग शरीर में बाधाएं उत्पन करते है

किशोरावस्था में संवेगो का विकास :-

१. संवेगात्मक अवस्था में किशोर शारीरिक क्रिया से ज्यादा मौखिक क्रिया करता है
२. किशोर जल्दी ही अपने क्रोध की अभिव्यक्ति कर देते है
३. किशोरों को अपना विकास , पालन पोषण अच्छा न होने की पीड़ा होती है
४. परीक्षा में फ़ैल होने , सामाजिक प्रतिष्ठा गिरने का भय रहता है
५. संवेगो के कारण समायोजन की समस्या आती है
६. इच्छापूर्ति में बाधा आती है
७. समूह के प्रति वफ़ादारी दिखाते है

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक एवं दशाएं:-

१. सामाजिक सम्मान
२. व्यक्तित्व
३. काम प्रवृति की तीव्रता
४. स्वास्थ्य
५. आर्थिक स्थिति
६. चेतनता व जागरूकता
७. विद्यालय का वातावरण
८. दोस्तों का व्यव्हार
९. स्वयं की शैक्षिक स्थिति
१०.परिवार व विद्यालय का वातावरण

संवेगात्मक विकास हेतु शिक्षा :-

१. निर्देशन एवं परामर्श
२. आदर्शात्मक विद्यालय का वातावरण
३. मूल्य व नैतिक शिक्षा
४. व्यायाम व योग शिक्षा
५. मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों की प्रस्तुति
६. हॉबी कक्षाओं का आयोजन

Unit I - Part (c)

Heredity and Environment (वंशानुक्रम एवं वातावरण)

आनुवंशिकता या वंशानुक्रम :- हमारे शरीर में DNA पर दानेदार संरचनाएं पाई जाती है जिन्हे जीन कहते है | माता-पिता के गुण , विशिष्टताएं बच्चो में इन्ही जीन द्वारा पहुँचती है इस प्रक्रिया को आनुवंशिकता या वंशानुक्रम कहते है |

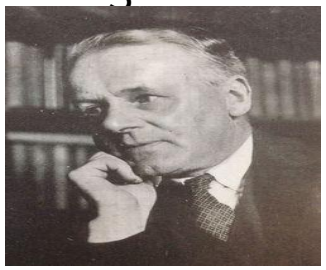

पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में पहुंचने वाले लक्षणों को आनुवंशिक लक्षण कहते है

Sir James Drever

जेम्स ड्रेवर के अनुसार - माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सन्तानो में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम कहलाता है |

वंशागति , वंशागति के सिद्धांतो द्वारा सिद्ध हो चुकी है , वंशागति के निम्न सिद्धांत है :-

१. लेमार्क की वंशागति के सिद्धांत
२. डार्विन का सिद्धांत
३. उत्परिवर्तन का सिद्धांत
४. मेंडलवाद
५. लिंग संबंधी वंशानुक्रम

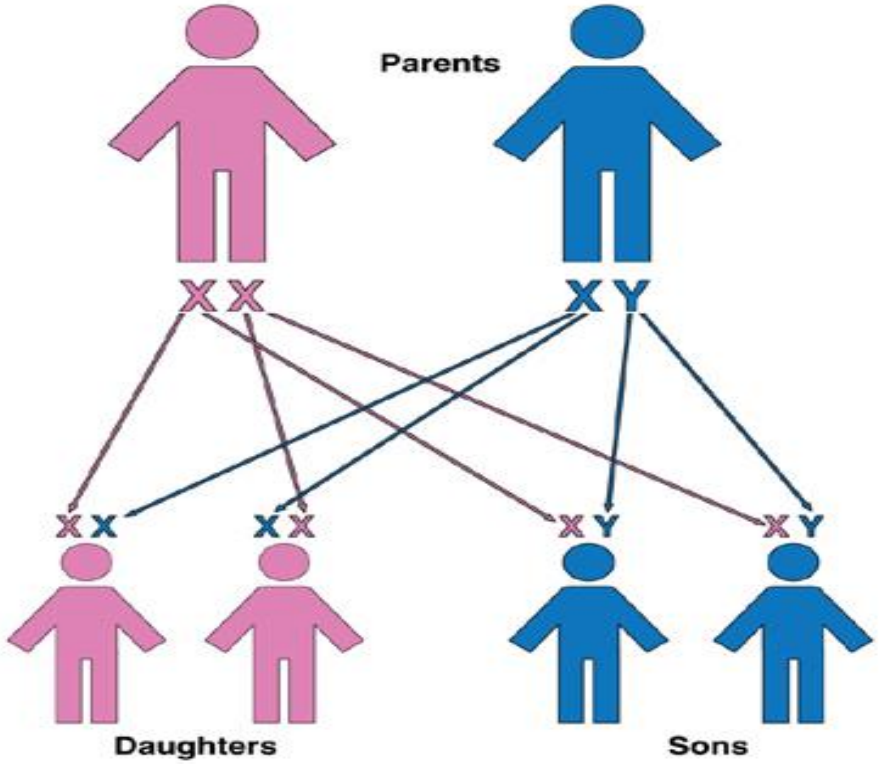

बालक के विकास में वंशानुक्रम का प्रभाव :-

१. लिंग भेद
२. शारीरिक लक्षण
३. बुद्धि पर प्रभाव
४. अन्य प्रभाव

उपरोक्त अध्ययन बताते है की बालक विकास पर वंशानुक्रम का प्रभाव पड़ता है

वातावरण : वातावरण से तात्पर्य प्रकृति की उन सभी शक्तियों से है जिनका प्रभाव मनुष्य के विकास पर पड़ता है जैसे जलवायु , प्रकाश , तापक्रम , वायु आदि |

सामाजिक वातावरण , परम्पराएं, रीतिरिवाज , संस्कृति , दर्शन , आचरण , रूचि ,घर , विद्यालय व समाज का वातावरण सभी बालक के विकास को प्रभावित करते है |

रॉस के अनुसार - "वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमे प्रभावित करती है "

बालक के विकास में वातावरण का योगदान

१. कैंडोल के अध्ययन के अनुसार
२. जुड़वाँ बच्चे भिन्न भिन्न वातावरण
३. जॉनलॉक के विचार
४. वाटसन के विचार
५. जंगली जानवरो क बीच पले बच्चे का अध्ययन

<u>वंशानुक्रम में शिक्षा का महत्व</u> :- वंशानुक्रम में विश्वास करने वाले यह मानते है की हीन बुद्धि वाले को कुशाग्र नहीं बनाया जा सकता | शिक्षा के अलोचको ने इस तरह के विचार व्यक्त कर शिक्षक के हाथ पेर काट दिए |

<u>वातावरण का शिक्षा में महत्व:-</u> वातवरण में वह सभी कारक आते है जिन्हीने गर्भाधान के बाद बालक के विकास को प्रभावित किया है इनमे अर्जित गुण , आदते , स्वभाव , रूचि , शिक्षा , धर्म , पारिवारिक वातावरण , सामजिक वातावरण , विद्यालय वातावरण आदि कारक आते है |

<u>वंशानुक्रम व वातावरण का सापेक्षिक महत्व</u> :- हम अध्यापक होने के नाते दोनों मतों में से एक की अवेहलना नही कर सकते | बालक की शिक्षा व विकास में वंशानुक्रम व वातावरण दोनों

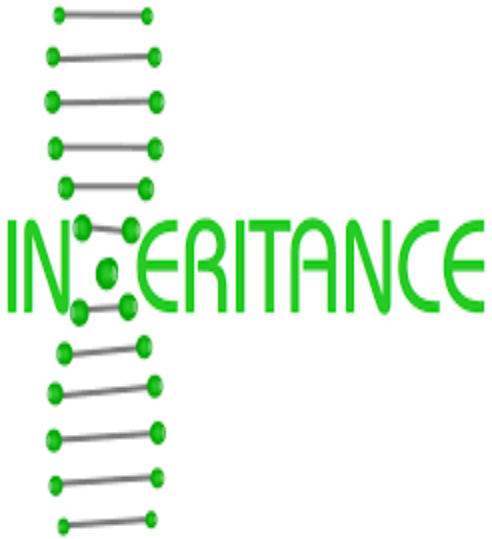

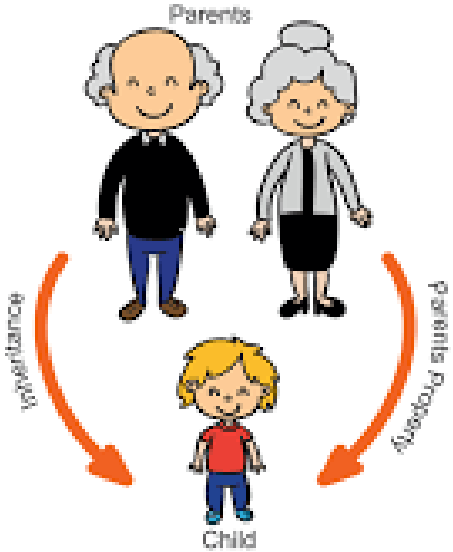

THANK YOU